Research Paper Political Science

वर्तमान समय में गाँधी जी के विचारों की सार्थकता (Vartaman Samay Me Gandhi Ji Ke Vicharo Ki Sarthakta)

Dr. Suresh Kumar Khinchi

Rajnitik Vignan Sanskar Bharati, Snatak Mahavidhyaly Jaat-Pali, Hariyana.

KEYWORDS

महात्मा गाँधी जी जिन्होंने विश्व सत्ता के साथ एकाअधिकार सीापित कर दिया है। उन्हें देखने पर सबसे पहले यह चीज नजर आती है, कि वह महान धैर्य और उत्कृष्ट प्रेम सरल शिशु जैसे है। वे अपने विरोधियों के साथ भी मधुर और विनयी तथा अंत. रआत्मा में कहीं जरा–सा खोट नहीं है। यही वह व्यक्ति जिन्होंने तीस करोड़ लोगों को जगा दिया तथा ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया और मानव राजनीति का एक ऐसा आंदोलन प्रारम्भ किया जिसकी तुलना लगभग दो हजार वर्षों के इतिहास में हीं नहीं है।

अब वो समय आ गया है। जब गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों को विश्वव्यापी स्तर पर व्यवहार में लाना चाहिए। इनका प्रयोग अवश्य किया जाएगा। क्योंकि जनता यह अनुभव करती है। कि इसके सिवाय विनाश से बचने की कोई आशा नहीं है। विश्व के विचार जीवन और संस्कृति को गाँधी जी की अति महत्वपूर्ण देन है। जिस समय गाँधी ने सार्वजनिक क्षेत्र में पदार्पण किया। उस समय सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक वातावरण अत्यन्त भ्रष्ट था।

समान्यतया यह मान्यता प्रचलित थी कि नैतिकता के नियम तो नैतिकता से परे हैं तथा सार्वजनिक जीवन तो नैतिकता से परे है। गाँधी जी ने मुल्यों को सार्वजनिक जीवन का आधार बनाने का संकल्प किया। उन्होंने अपने व्यवहार और कार्य से यह सिद्ध कर दिया कि सत्य और अहिंसा व्यक्तिगत व्यवहार के ही नहीं वरन सार्वजनिक और विशेषतया राजनीतिक व्यवहार के आधार बन सकते हैं तथा आत्मबल से पशुबल की चुनौती का सफलतापूर्वक सामना किया जा सकता है।

गाँधी जी ने स्वयं यह स्वीकार किया है कि मैने न सिद्धान्त की रचना और नही गाँधीवाद जैसी कोई वस्तु दी है। गाँधी जी के इस कथन के बावजूद निःशंदेह यह कहा जा सकता है, कि उन्होंने सामाजिक, आर्थिक और व्यवहारिक राजनीतिक के अतिरिक्त राजनीतिक विचारधारा को महत्वपूर्ण देने है।

आज वर्तमान में भारत के उद्धार व आर्थिक प्रति का एक मात्र मार्ग गाँधीवाद है। बेकारी की समस्या का निदान कुटीर उद्योगों की व्यवस्थासे किया जा सकाता है। संक्षेप्त में गाँधीवाद असंगत नहीं है। यह एक शाश्वत दर्शन है। इस व्यवहार में प्रयोग किया जा सकता है। हमारे नीति निर्देशक सिद्धान्तों में कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जायेगा।

समान्यतया राजनीति को चतुर व्यक्तियों का खेल समझा जा सकता है। राजनीति में धोखा, बेइमानी, झूठ, फरेब आदि को विशेष महत्व दिया जाता है। परन्तु गाँधी जी ने इस बात को स्वीकार नहीं किया। वे राजनीति को नैतिक आधार प्रदान करना चाहते थे। गाँधी जी धर्म रहित राजनीति के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि ''सत्य के प्रति मेरी लगन मुझे राजनीति में खींच लाई है। मैं बिना किसी संकोच के और बड़ी नम्रता सहित यह कहता हूँ कि जो लोग यह कहते हैं कि राजनीति के साथ धर्म का कोई सम्बंध नहीं है। वे वास्तव में धर्म का अर्थ नहीं समझते''।

वर्तमान समय में यदि नैतिकता को आधार मानकर राजनीति की जाए तो सम्पूर्ण मानव जाति को सारी बुराईयों और कठिनाईयों से मुक्ति मिल जायेगी। उन्होंने राजन. ीति को वर्तमान युग की कुटनीति से ऊँचा मानकर नैतिकता के उच्च स्तर तक पह. ूँचाया। गाँधी जी ने सार्वजनिक तथा राजनीतिक जीवन से भी श्रेष्ठ लक्ष्य की प्राप्ति के लिए नैतिक साधनों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने धर्म को कर्मकाण्ड तथा पाखण्डों से मुक्त किया और उसे संकुचित न रखकर व्यापक रूप प्रतिपादन किया। जिसका एकमात्र लक्ष्य मानवता तथा दरिद्र की सेवा करना होता है। इस प्रक. ार महात्मा गाँधी जी ने धर्म को व्यापकता प्रदान करके उसे लौकिक और सांसारिक बनाया है। यह कहा जा सकता है कि गाँधी जी ने राजनीति का आध्यात्मीकरण और धर्म का आलौकिकरण किया।

अहिंसा गाँधी जी के जीवन का एक अभिन्न अंग थी। अहिंसा को गाँधी जी ने निध र्नों और कमजोरों का एक शक्तिशाली शस्त्र बताया। जिसके माध्यम से वे अन्याय व अत्याचार का विरोध कर सकते हैं। आज के युग के शासित तथा शासक राजनीति से हिंसक घटनाओं से दूर रखें तथा नैतिक सिद्धान्तों पर इस को आधारित करें तो यह विश्व इस पृथ्वी पर ही स्वर्ग बन जाएगा।

मानव जीवन को गाँधी जी एक अन्य महत्वपूर्ण देन यह है कि उन्होंने व्यक्ति के महत्व तथा मानवीय शक्तियों में हमारे विश्वास को पुनः जागृत किया है। पाशचात्य की ओद्योगिक सभ्यता ने मानव जाति को बहुत अधिक आघात पहूँचाया है। उन्होंने मानव की उपयोगिता व महत्व का प्रतिपादन किया है। गाँधी जी ने इस बात पर भी बल दिया कि अगर लोकतंत्र को वास्तविक रूप में सीापित करना है तो जनसाधारण को सत्ता के विरोध करने की विधि को सीखना होगा। गाँधी जी ने हमेशा इस बात पर बल दिया कि अच्छे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए साधन भी अच्छे होने चाहिए। अगर उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए गलत साधनों का प्रयोग किया गया तो वह उद्देश्य लम्बे समय तक नहीं हो सकता। प्रसिद्ध इतालवी विद्वान मैक्यावली प्रथम विचारक माना जाता है। इस महान विचारक का कथन था कि किसी भी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए दोनों प्रकार अच्छे तथा बुरे साधन अपनाए जा सकते हैं। अगर दोनों की तुलना की जाए तो अवश्य ही मानवता की मुक्ति का संकेत गाँधी जी के विचारों में प्रतीत होता है।

गाँधी जी की एक अन्य महत्वपूर्ण देन भी लोकतंत्र में अल्पमत एवं बहुमत के बारे में । उनकी मान्यता थी कि सामान्यतया मसलों पर निर्णय बहुमत द्वारा ले लेना चाहिए। लेकिन इसे सैद्धान्तिक व व्यवहारिक तौर पर लागू नहीं करना चाहिए। महत्वपूर्ण मामलों व मुद्दों पर बहुमत अल्पमत की उपेक्षा नहीं कर सकता। कोई भी विचाध ारा सही निर्णयों के एकाधिकार का दावा नहीं कर सकती। गलती मानव स्वभाव का एक गुण मान सकते हैं। अर्थात् मानव से ही गलती हो सकती है। कई बार हमें अपने निर्णयों को बदलना पड़ता है। अतः यह आवश्यक है कि हम अपने विरोधी के विचारों को समझें। यदि अल्पमत के विचारों को न समझे तो भी उनका आदर अवश्य करें। गाँधी जी के विचारों का भाव यह है कि बहुमत व अल्पमत को अपना दिमाग खुला रखना चाहिए। दोनों को इस पर मंथन करना चाहिए कि कौन सा निर्णय सही है तथा कौनसा निर्णय गलत है। इस मत का अच्छा उदाहरण संविधान के निर्माताओं के अनुच्छेद 105 पर वाद–विवाद करके दिया गया है।

राश्ट्रवाद को अन्तर्राष्ट्रवाद की विरोधी विचारधारा माना जाता है। परन्तु गाँधी जी ने इस विचारधार का विरोध किया। उनकायह दृढ़ विश्वास था कि राष्ट्रवाद अन्त. र्राष्ट्रवाद दो ही विचाराधारा साथ–साथ चलनी चाहिए। उनका ऐसा विचार था कि अन्तर्राष्ट्रवादी बनने से पूर्व राष्ट्रवादी होना चाहिए। यदि ये सभी राष्ट्र उतनी ही वस्तुओं से संतुष्ट हैं जितनी उनके पास है तो राष्ट्रवाद व अन्तर्राष्ट्रवाद में किसी प्रकार को विरोध नही कर सकता। यदि विश्व के भिन्न–भिन्न देशों के शासक ऐसे दृष्टिकोणों को ग्रहण कर ले तो भयानक युद्धों का विचार एक व्यतीत समय की कहानी बन जायेगा। विश्व दो महायुद्धों के परिणाम को झेल चुका है। और अमेरिका बराबर एक महाशक्ति बना हुआ है। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्वीकृति के बिना अमेरिका ने ईराक पर बमबारी की। जिसका संसार के अनेक देशों ने विरोध किया। यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी इसकी आलोचना की। गाँधी जी विश्व को भ्रातृत्व का सन्देश अत्यन्त महत्वपूर्ण है। गाँधी जी का ऐसा विचार था कि युद्ध समस्याओं का अन्त नहीं करता अपितु यह समस्याओं को उत्पन्न करता है।

गाँधी जी विश्व की वास्तविकताओं से भली भांति परिचित थे। परन्तु वे अपने मूल सिद्धान्तों, सत्य, अहिंसा के मामले में कोई समझौता करने को तैयार नहीं थे। वे सदा इस बात पर बल देते थे रहे कि भय, लोभ, और अहंकार मानव के सबसे बड़े शत्रु हैं। दूसरों को बदलने से पहले हमें अपने आप को बदलना होगा। आज राष्ट्र भी व्यक्तियों की भांति एक बन्धे हुए रास्ते पर चलने का प्रयास नही कर पाते। चाहे वह मार्ग उस राष्ट्र को बन्ध गलयरों तक ही क्यों न पहुँचा दे। आज विश्व में छल–. कपट, हिंसा, झूठ और दुराचार का वातावरण है। यदि मानवता को जीवत रखना है तो गाँधी जी द्वारा बताए गए सिद्धान्तों को अपनाना होगा।

गाँधी जी एक महान आध्यात्मिक पुरुष थे और राजनीति के समान ही अर्थव्यवस्था के सम्बन्ध में उनका विचार था कि सच्चा अर्थशास्त्र नैतिकता के महान नियमों के प्र. तिकूल हो ही नही सकता। सच्चा अर्थ शास्त्र सामाजिक न्याय चाहता है। वह प्रत्येक व्यक्ति का यहा तक दुर्बल व्यक्ति का भी सामाजिक हित चाहता है। और अच्छे विच. ारधारा में औद्योगिकरण का विरोध किया तथा कुटीर उद्यौग धंधों का समर्थन किया। इसके साथ–साथ गाँधी जी के प्रन्यास की अवधारणा का प्रतिपादन किया।

गाँधी जी ने मानव अधिकार और कर्त्तव्य का भी प्रतिपादन किया। उनका विचार था

कि भारत के प्रत्येक व्यक्ति को विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, संगठन की स्व. तंत्रता व धर्म और अन्तःकरण की स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए। गाँधी जी मानव अधि ाकारों की अपनी इस सूची में नवीन वातावरण और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन करने को तैयार थे। परन्तु गाँधी जी मानव अधिकारों की सूची में अधिकरों की अपेक्षा कर्त्तव्यों पर ज्यादा बल देते थे। वास्तव में कर्त्तव्य पालन से ही अधिकारो की प्राप्ति होती है। उनका मानना था कि कर्म कर्त्तव्य है, फल अधिकार है।

गाँधी जी कि एक महत्वपूर्ण देन यह है कि उन्होंन अस्पृश्यता का जड़ से नाश किय. ा। अस्पृश्यता हिन्दू समाज के लिए अभिशाप है। जिसे मिटाने के लिए गौतम बुद्ध के समय से ही प्रयास होते रहे हैं। परन्तु गाँधी जी की भूमिका सबसे अधिक इस क्षेत्र में ही सफल हुई। गाँधी जी के अथक प्रयासों के कारण ही अस्पृश्यता को एक अपराध के रूप में घोषित किया है।

राजनीति में गाँधी जी के योगदान के सम्बंध में आचार्य कृपलानी ने कहा है कि– ''राजनीति का सत्य, अहिंसा, साधनों की पवित्रता द्वारा अध्यात्मीकरण करके अन्याय एवम् निरकुंशता का सत्याग्रह द्वारा सामना कर तथा अपने रचनात्मक कार्यक्रमों द्व ारा गाँधी जी ने सामाजिक, राजनीतिक एवम् आर्थिक जीवन का संयोग एवम् समन्वय करने का प्रयत्न किया तथा प्रभावकारी लोकतंत्र की स्थापना कर न्याय एवम् समानता पर आधारित समाज की नींव डाली और इस प्रकार विश्व–शांति के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

गाँधी जी की देन के सम्बन्ध में वर्णन करते हुए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि–

''महात्मा गाँधी की सर्वोतम देन इसमें नही है कि उन्होंने भारत की साधारण जनता को जागृत किया और इतने बड़े ढंग से संगठित किया जितने बड़े ढंग से पहले कभी संगठित नही हुए थे। मेरे विचारानुसार भारतीय राजनीति और सम्भवत विश्व की रा. जनीति मं असैनिक मानवता को उसकी बड़ी देन है वह अनोखा साधन है जो उन्होंने गलत कार्यों के विरूद्ध लड़ने के लिए बताया और जिसकी उन्होंने स्वयं आजमाईश की''

भारत के राजनीतिक चिंतन में गाँधी जी को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। आधुनिक भारत के सामाजिक व राजनीतिक चिन्तन में गाँधी जी का योगदान बड़ा अद्भुत रहा है। उन्होंने भारत पर ही नहीं पूरे विश्व में अपनी छाप छोड़ी है। गाँधी जी ने मानव जीवन के सभी पहलुओं का गहन अध्ययन किया और विभिन्न समस्याओं को सुलझा. ने के लिए अनेक उपाए सुझाए उनके द्वारा बताए गए उपाय सामाजिक न होकर शाश्वत है। जिसके कारण शताब्दियों तक केवल भारत ही नही अपितु पूरे विश्व के लोग गाँधी जी के विचारों से प्रेरणा लेते रहेंगे।

REFERENCES

1. डॉ. विष्णु भगवान – भारतीय राजनीतिक विचारक द्य 2. डॉ. पुखराज जैन– भारतीय राजनीतिक विचारक द्य 3. गाँधी जी– सत्य के समय मेरे प्रयोग द्य 4. डॉ. प्रभुदत शर्मा– आधुनिक राजनीतिक विचारों का इतिहास द्य 5. डॉ. मदन गोपाल गाँधी– गाँधी व मार्क्स द्य 6. श्री. बी.एस. मल्हौत्रा– राजनीतिक विचार द्य 7. डॉ. राजेश यादव– गाँधी जी के विचार द्य